Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 18, Issue No. 6, October-2021, ISSN 2230-7540

त्रिदोषों के संबंध में ग्रहों की रोगनिदान में भूमिका

सीमा नायक*

एमए, (स्वर्ण पदक विजेता), ज्योतिष शास्त्र, जीवाजी यूनिवर्सिटी, ग्वालियर

सार - आयुर्वेद के साहित्य में कहा गया है कि शरीर तीन मूल तत्वों से बना है: दोष, धातु और मल। दोष, धातु और मल को शरीर की "तीन जड़ें" कहा जाता है। इसलिए स्वास्थ्य को बनाए रखने और शरीर में दोष, धातु और माला की असामान्य स्थिति से उत्पन्न विकृति या बीमारी को ठीक करने के लिए, आयुर्वेद का प्राथमिक लक्ष्य शरीर के अंदर इन दोषों, धातु और माला को संतुलित रखना है। इन तीनों में शरीर के सभी अवयव पाए जा सकते हैं। दोषों की नियुक्ति तीनों में सबसे महत्वपूर्ण है।

----------X----------

1. परिचय

हमारा शरीर पांच तत्वों (जल,पृथ्वी आकाश, अग्नि,वायु) से मिलकर बना है। आयुर्वेद के अनुसार शरीर का स्वास्थ्य इन तीन चीजों पर सबसे ज्यादा निर्भर करता है वह है वात, पित्त और कफ। अगर यह तीनों संतुलित अवस्था में है तो आप स्वास्थ्य हैं अगर इनमें से किसी का भी संतुलन बिगड़ा तो रोग उत्पन्न होने लगते हैं। इसी कारण से इन्हें दोष कहा जाता है तथा इनकी संख्या तीन होने के कारण इन्हें त्रिदोष कहते हैं।

प्रत्येक दोष में ऊपर बताए गए पांच तत्वों में से दो तत्व होते हैं और उन्हीं तत्वों के स्वभाव के आधार पर इन दोषों के लक्षण निर्धारित किए जाते हैं | जैसे कि वात दोष में आकाश और वायु इन दो तत्वों से मिलकर दोष उत्पन्न होता है | इन दोनों का स्वभाव गतिशीलता है,तो वात के लक्षण भी गति से जुड़े होते हैं।

इन दोषों के असंतुलित होने के दो मुख्य कारण है:

- पहला, इन दोनों की बढ़ोतरी
- दूसरा, इनमें कमी

वैसे देखा जाए तो किसी दोष में बढ़ोतरी होने से रोग होते हैं, क्योंकि अगर दोष स्वयं की कमी की अवस्था में हो तो रोग उत्पन्न नहीं कर सकता |

2. वात दोष

वायु और आकाश इन दो तत्वों से मिलकर बना है| वात दोष को सबसे अधिक महत्वपूर्ण माना गया है, इसके अनुसार जो तत्व शरीर में गति या उत्साह उत्पन्न करते है वह वात या वायु दोष कहलाता है| शरीर में होने वाली सभी गतिविधियां जैसे भोजन पाचन में गति, रक्त संचार आदि जिस भी प्रक्रिया में गति है, वह वात के कारण है |

वात की वजह से शरीर में सभी धातु है अपना काम करती हैं | शरीर के अंदर मौजूद जितने भी खाली स्थान हैं वहां वायु पाई जाती है शरीर का किसी एक अंग का दूसरे अंग से जो संपर्क है वह भी वात के कारण है।

वात इतना प्रभावशाली है कि वह एक दोष को एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुंचा देता है, इसके कारण उस जगह पर अगर पहले से कोई दोष मौजूद है,तो वह और अधिक बढ़ जाता है।

वात का शरीर में मुख्य स्थान कोलन या पेट माना जाता है इसके अलावा नाभि के नीचे का भाग छोटी व बड़ी आंत, कमर,जांघ ,टांग हड्डियों में भी वात का निवास होता है।

आयुर्वेद के तीन आयुर्वेदाचार्य ने अपने ग्रंथों में इन तीन दोषों से संबंधित लक्षण चिकित्सा पर निदान बताएं हैं, चरक सुश्रुत और बाणभट्ट ने अपने ग्रंथों में त्रिदोषों के बारे में विस्तृत विवरण दिया है।

वात से सम्बंधित रोग- जैसा कि पूर्व में बताया गया वायु एवं आकाश के विकार से वात रोग उत्पन्न होता है यह तीन प्रकार का होता है।

- आम वात
- शूल वात

www.ignited.in

- पक्षाघात वात
- **आम वात-** इस वात रोग में शरीर के जोड़ों में दर्द व सूजन रहती है
    - गुरु 6, 8, 2 भाव में हो, ..
    - गुरु और लग्नेश दोनों त्रिक स्थान में होकर आपस में दृष्टि या युति संबंध बनाते हो।
- **शूल वात-** शूल वात रोग भी दो प्रकार के होते हैं:
    - एक अंगों का शुल वात
    - दूसरा संधि का शूल वात,

शरीर के किसी भी अंग में तीव्र चुभन भरा दर्द होना अंगशूल कहलाता है, जैसे सिर में, हृदय में, कमर में आदि स्थान विशेष में दर्द शूल होना वात कहलाता है, तथा संधिशूल में संधि अर्थात जोड़ों में दर्द की स्थिति कहते हैं इसमें निम्नलिखित ज्योतिषीय योग बनते हैं

1. शनी के साथ चंद्रमा का योग
2. चंद्रमा अस्त हो
3. षष्ठेश पापी ग्रहों से पीड़ित या दृश्य हो
4. षष्ठेश गुरु से दृश्य ना हो।

- **पक्षाघात-** किसी अंग विशेष का कार्य करना बंद कर देना पक्षाघात कहलाता है | इसमें अंग संज्ञाहीन या शून्य हो जाता है।

इन तीनों के अलावा कुछ वात रोग भी होते हैं जैसे, आलस, अनिद्रा, हल्का सा दर्द होना, कंपन होना, अंग सुप्तता,आदि। इन रोगों के ज्योतिषीय योग निम्नानुसार हैं :

1. कर्क राशि में स्थित सूर्य पर शनि की दृष्टि हो।
2. सप्तम भाव में पाप ग्रह के साथ बुध हो, या उस पर बुद्ध की दृष्टि हो।
3. नीच राशि में शनि के साथ षष्ठेश हो।

वात से संबंधित ग्रह शनि, राहु व केतु है | एवं वात से संबंधित राशि वृष, कन्या व मकर है।

वात से संबंधित रोग वायु एवं आकाश तत्व के असंतुलन के गड़बड़ी के कारण होते हैं | यह जिससे स्थान या अंग में वातरोग होता है, वह स्थान पीड़ा, सूजन या शून्यता से पीड़ित होता है।

वात प्रकृति के लोगों में निम्नलिखित लक्षण पाए जाते हैं :

- शरीर में रूखापन,दुबलापन
- धीमी भारी आवाज,
- नींद की कमी
- आंखों ,भौहे पलकों,ठोड़ी के जोड़ों होठों जीभ,सिर व हाथों में अस्थिरता
- निर्णय लेने में हड़बड़ी
- जल्दी क्रोधित हो जाना
- चिड़चिड़ाना
- भूल जाने की आदत

वात दोष के मुख्य लक्षण हैं।

3. पित्त दोष

पित्त दोष अग्नि और जल इन दो तत्वों से मिलकर बना है |

पित्त शब्द संस्कृत के तप शब्द से बना है जिसका मतलब है: शरीर में जो तत्व गर्मी उत्पन्न करते हैं पित्त है। यह शरीर में उत्पन्न होने वाले एंजाइम और हारमोंस को नियंत्रित करता है | आम भाषा में इससे समझे तो हम जो भी खाते पीते हैं या सांस द्वारा जो हवा अंदर लेते हैं उन्हें खून हड्डी मज्जा मल मूत्र आदि में परिवर्तित करने का काम पित्त करता है इसके अलावा मानसिक कार्य जैसे साहस, खुशी आदि का संचालन भी पित्त करता है|

पित्त की कमी का मतलब है आपकी पाचन शक्ति या अग्नि तत्व की कमी अगर शरीर में पित्त दोष ठीक अवस्था में नहीं है तो इसका सीधा मतलब है कि आपकी पाचन तंत्र में गड़बड़ी है |

जिस व्यक्ति के शरीर में पित्त दोष ज्यादा होता है वह पित्त प्रकृति वाला कहलाता है| पित्त का शरीर में मुख्य स्थान पेट, छोटी आत है | इसके अलावा छाती व नाभि का मध्य भाग ,पसीना, लिंग, खून ,पाचन तंत्र व मूत्र स्थान में भी पित्त का निवास माना गया है।

www.ignited.in

पित्त से संबंधित रोग निम्नानुसार है।

1. रक्तपित्त
2. शीतपित्त
3. दाह पित्त
4. तृष्णा पित्त

रक्तपित्त में पित्त कुपित होने से रक्त स्राव होता है| जैसे नकसीर फूटना, पेशाब या मल में रक्त आना | इस रोग के लक्षण है इस रोग में रोगी को ठंडे स्थान में रहना चाहिए |इस रोग का विचार मुख्य रूप से मंगल से किया जाता है| इस रोग के योग निम्नानुसार है

1. मंगल सप्तम में हो तथा नीच राशि में हो |
2. छठे स्थान में मंगल हो तथा षष्ठेश पाप ग्रह से पीड़ित या दृष्ट हो | तीसरा चंद्रमा की महादशा में मंगल की अंतर्दशा हो।

शीत पित्त ठंडी हवा के स्पर्श से पित्त के साथ कप और वायु कुपित हो से शरीर में छोटे-छोटे दाने निकल आते हैं | जिससे शरीर में सूजन, खुजली, गले में खुश्की,और हल्का सा बुखार रहता है इसमें वात,पित्त और कफ तीनों कुपित होते हैं।

इनका ग्रह योग निम्नानुसार है।

1- सूर्य शुक्र और शनि एक ही भाव में हो
2- सनी सकते हो तथा पाप ग्रहों उसके साथ चतुर्थ भाव में हो
3- गुरु 6# तथा पाप ग्रहों के साथ चतुर्थ स्थान में हो
4- लग्न में मंगल तथा सप्तम में सूर्य हो।

दाह रोग में शरीर में जलन होती है, गले में खुश्की और आंखें लाल होती है |

1- लग्न में मंगल तथा सप्तम में सूर्य हो तो दाह योग बनता है
2- दो ग्रहों के बीच चंद्रमा हो तथा सप्तम में शनि हो

तृष्णा बार-बार पानी पीने पर भी तृप्ति ना होना तृष्णा कहलाता है | इसमें बार-बार ठंडा पानी पीने की इच्छा होती है इस ग्रह के योग निम्नानुसार है

1- सिंह राशि में स्थित चंद्रमा की स्थिति पर पाप ग्रहों की दृष्टि
2- चंद्रमा सिंह राशि में स्थित हो।

4. कफ रोग

कफ दोष पृथ्वी और जल इन दो तत्वों से मिलकर बना है,कफ के महत्व और क्रम के अनुसार का तीसरे स्थान पर आता है | कमजोर शरीर के सभी अंगो का पोषण करता है और बाकी दोनों दोषों वात और पित्त को भी नियंत्रित करता है |

हमारी मानसिक और शारीरिक काम करने की क्षमता, रोग प्रतिरोधक क्षमता, काम शक्ति, बैर्य, क्षमा, और ज्ञान आदि कफ के गुण हैं | कफ में मौजूद तमो भाव नींद का मुख्य कारण है |

शरीर में अगर कफ़ की मात्रा में कमी आती है तो बाकी दोष अपने आप बढ़ने लगते हैं।

कफ भारी मुलायम, मधुर स्थित और चिपचिपा होता है | जिस व्यक्ति के शरीर में कफ दोष होता है वह कफ प्रकृति वाला कहलाता है | हमारे शरीर में कफ का मुख्य स्थान पेट और छाती हैं | इसके अलावा गले के ऊपरी भाग कंठ,सर, गर्दन, हड्डियां पेट के ऊपरी हिस्से और वसा कफ़ का निवास स्थान है |

कफ विकार से उत्पन्न होने वाले रोगों को कफ रोग कहते हैं इसमें खांसी, शवास रोग, क्षय रोग, हिचकी आदि प्रमुख है|

1. खांसी व श्वसन रोग बार-बार आसना एवं दम फूलना को खांसी कहते हैं इसे अस्थमा नाम से भी जाना जाता है इस रोग के निम्नलिखित ज्योतिषीय योग है एक शनी एवं गुलक छठे भाव में हो और उस पर सूर्य मंगल व राहु की दृष्टि हो तथा शुभ ग्रह की दृष्टि या युति ना हो
2. कर्क स्थित सूर्य पर शनि की दृष्टि हो

जुकाम व श्लेष्मा रोग: बार बार छींक आना, नजला रहना, नाक बहना ,इसे जुखाम कहते हैं | जब जुखाम पुराना हो जाता है तो इसे श्लेष्मा कहते हैं | इस रोग के ग्रह योग निम्नानुसार है :

1- लग्न में पाप ग्रह के साथ चंद्रमा हो और उस पर पाप ग्रह की दृष्टि हो

2- सूर्य चंद्र मंगल बुध शुक्र शनि यह ग्रह एक साथ हो

3- पषष्ठ भाव में शाष्टांश में मंगल बुध हो।

क्षय रोग: इस रोग में हाथ पैर व बगल में गर्मी, हल्का बुखार, छाती में बलगम तथा शरीर में कमजोरी रहती है | व्यक्ति का वजन रोग रोधन शक्ति कम हो जाती है। क्षय रोग के ग्रह योग निम्नानुसार है।

1. शुक्र व लग्नेश दोनों त्रिक स्थान में हो।
2. लग्न पर मंगल व शनि की दृष्टि हो
3. सूर्य व चंद्रमा एक दूसरे के नवमांश में हो।
4. अष्टम में पाप ग्रह पंचम में शनि तथा लाभ स्थान में सूर्य हो।
5. दशम भाव में मंगल शनि हो एवं अष्टम चतुर्थ या लग्न में सूर्य हो।
6. छठ में स्थान में जल राशि उसमें पाप युक्त क्षीड चंद्रमा हो तथा लग्न में पाप ग्रह हो।

हिचकी: हिचकी आने को हीक्का कहते हैं | गला बैठ जाना, तेज खांसी, उल्टी, कुकर खांसी, आदि रोग में आते हैं|

5. वात पित्त कफ से अन्य रोग

ज्वर- बुखार आने को ज्वर कहते हैं इस रोग का प्रमुख कारक ग्रह सूर्य है जबकि चंद्रमा व मंगल इसके सहायक है इसके योग निम्नानुसार है:

1. लग्नेश व षष्ठेश सूर्य के साथ हो।
2. राहु सूर्य मंगल तथा सनी साथ हो
3. गुरु की महादशा में मंगल की अंतर्दशा हो।
4. शनि की महादशा में शनि की अंतर्दशा हो पांच नीच राशि के सूर्य की महादशा हो।

पीलिया: इस रोग में नाखून नेत्र व शरीर का रंग पीला पड़ जाता है | शरीर में खून में पित्त की मात्रा बढ़ने से यह रोग होता है | ग्रहों के योग में:

1- मंगल के साथ चंद्रमा सप्तम भाव में

2- अष्टम में शनि हो।

कमला रोग: इस रोग में आंखों में पीलापन और शरीर में खून की कमी हो जाती है| इस रोग में व्यक्ति का शारीरिक वजन कम होता है| व्यक्ति चिड़चिड़ा हो जाता है,एवं हर समय व्यथित महसूस करता है | इस रोग का कारण निम्नलिखित ग्रह योग है

1- छठ में स्थान में मंगल के साथ चंद्रमा हो।

2- शुक्र की महादशा में चंद्रमा की अंतर्दशा हो।

6. उपसंहार

इस तरह निर्दोष व्यक्ति के स्वास्थ्य शारीरिक स्वास्थ्य के साथ-साथ मानसिक स्वास्थ्य पर भी असर डालते हैं विभिन्न प्रकार के उद्बेग व्यक्ति में दिखाई पड़ने लगते हैं जिससे व्यक्ति सामान्य स्थिति में नहीं रह पाता विभिन्न तरह की पीड़ा विभिन्न योगों एवं त्रिदोषों के कारण व्यक्ति को झेलना पड़ता है इनका सम्मान करने के लिए कुंडली में इन लोगों के निराकरण के उचित उपाय करना आवश्यक होता है जिससे व्यक्ति सामान्य जीवन जी सके त्रिदोषों का संतुलन व्यक्ति के जीवन में उत्साह उमंग और कार्य क्षमता को बढ़ाने के साथ ही सामान्य जीवन जीने में सहयोग करता है

संदर्भ

1- एडवांस मेडिकल एस्ट्रोलॉजी (डॉक्टर सुनील शर्मा)

2- चिकित्सा ज्योतिष (अभय कात्यायन)

Corresponding Author

सीमा नायक*

एमए, (स्वर्ण पदक विजेता), ज्योतिष शास्त्र, जीवाजी यूनिवर्सिटी, ग्वालियर